ओम शांति,

कल हम सभी ने बाबा के प्यार को प्रैक्टिकल में देखा, सभी ने देखा? लोग केवल शाश्त्रो में लिखी हुयी बात को कहते है वोह प्यार का सागर है और हम सभी इन नैनो से उस प्यार के सागर को देखते है। तो बहोत सहज हो जाता है उसके प्यार में मग्न हो जाना। इस सीजन कि पिछली पांच मुरलियां में हर एक मुरली में बाबा ने महोबत में मगन रहो, मेहनत से मुक्त रहो, बाबा के प्यार में लीन रहो इसके लिए हम सभी को प्रेरणा दीं। क्यूँ जरुरी है बाबा के प्यार में मगन रहना? मगन कभी ना कभी तो हर आत्मा होती ही है। सब को अनुभव है कि मग्न हो गए तो संसार के आकर्षणों से मुक्त हो गए, बोज से मुक्त हो गए आत्मा में विशेस रूप कि शक्तियां जमा हो जाती है जब हम मग्न होते है। बाबा के प्यार में लीन होना सब कुछ भूल जाना यह बहोत सुंदर और बड़ी साधना है।

मेने देखा कि बहोत साड़ी माताएं जल्दी प्यार में मगन हो जाती है भाइयों को जरा देर लगती है। क्यूँ लगती होगी देर? क्यूँ लगती है भाइयों को देर? भाई ज्यादा बुद्धि का प्रयोग करते है और माता ज्यादा भावनाओ में रहती है। बाबा के प्यार में मग्न होने के लिए बुद्धि तो दिव्य होनी ही चाहिए पर उसके लिए हमारे दिल में कितना प्यार है, उसके लिए हमारे चित में कितनी भावनाएं है, कितना हमने उसको पहचाना है, कितनी हमें यह महसूसता है कि वोह हमारे लिए सारे दीन में क्या क्या करता है। ध्यान देंगे इस बात पर सभी। सारे दीं me वोह हमारे लिए बहोत कुछ करता है। यदि इस रहस्य को हम समझते चले तो उसके प्यार कि अनुभूति बहोत ज्यादा होने लगेगी।

में पहले आपको दो बातें याद दिलों। क्यूंकि बाबा निराकार है और निराकार से प्यार करना अपने में एक अनुपम चीज है। आपमें से जिन्होंने धर्म कि फिलॉसॉफी का अध्ययन किया हो उन्हें मालूम होगा कि जब संकराचार्य जब आये भारत में और उन्होंने निराकार के बारे में सब को सन्देश दिया उपदेश दिया तो उसके जाने के बाद समाज से भक्ति लगभग समाप्त होने लगी। क्यूंकि निराकार को कैसे प्यार करें? कैसे उसको भोग लगते भक्ति में? कैसे उसकी पूजा करतें? उसके बाद दूसरे आचार्यो ने विशेस कर रामानुज ने आकर साकार कि भक्ति को प्रोत्साहित किया और फिरसे भक्ति में रस पैदा हुआ, जो धर्म में सुख पन आगया था वोह समाप्त हो गया। अब बाबा तो निराकार है, हमें उससे प्यार करना है। अब तो वोह साकार में नहीं है काम भी करता है तो ऊपर अव्यक्त के माध्यम से करता है। मूल रूप में तो वोह निराकार है ही पर हमारे मन में बाबा से बहोत प्यार हो जाए इसका तरीका है बाबा कि मुरलियां में आता रहता है और सभी ध्यान देंगे क्यूंकि यह प्यार स्थूल नहीं है। जो आत्मा जितनी देह से न्यारी होगी उसके चित में बाबा के लिए प्यार बढ़ता ही जाएगा। इसलिए जो बार बार देह से न्यारे होने का अभ्यास करते है उन्हें बाबा के प्यार कि गहरी अनुभूति होती है। जो केवल सोचते है कि बाबा को कैसे प्यार करें? प्यार बनावटी नहीं हो सकता, प्यार क्रिएट भी नहीं किया जा सकता। हम सोचे हम संकल्प करें उसके लिए प्यार के कि बाबा हम तुम्हे बहोत प्यार करतें है इससे भी काम नहीं चलता। बाबा से हमारा बहोत प्यार हो जैसे कल भी बाबा ने कहा – उस प्यार कि निशानी होगी उसके फरमान पर चलना सहज होगा। जो कुछ वोह कहे बिलकुल सहज होगा क्यूंकि हमारा उससे बहोत प्यार है।

जिसका बाबा से प्यार होगा उसका मुरली से प्यार, उसके यज्ञ से प्यार, ब्राह्मण परिवार से प्यार यह सब कुछ प्रैक्टिकल में दिखाय देगा। कोई कहे मेरा बाबा से बहोत प्यार है परन्तु इन सब चीजो से प्यार नहीं है सवेरे मुरली कि बात आती है तो ठण्ड लगती है रजाई छोड़ी नहीं जाती तो बाबा इसे प्यार कहेगा? बरसात हो रही है आज तो सेंटर पे जा नहीं सकते इसे प्यार मन जाएगा? सेवा हो रही है हम तो यहाँ यहाँ बीजी है सेवा में सहयोग नहीं दे सकते इसे भी प्यार नहीं माना जाएगा। प्यार क़ुरबानी सिखाता है बाबा भी चाहता है और प्रैक्टिकल में हम भी येही चाहते है कि हमारा प्यार बहोत प्रैक्टिकल हो वोह केवल योग लगाने के मात्र तक ना हो वोह उसकी आज्ञाओं पर चलने का प्रैक्टिकल स्वरुप दिखाय दें। उसके प्यार में हम कुछ कर रहे हो यदि हम उसके प्यार में कुछ भी नहीं कर रहे तो वोह

इस प्यार को स्वीकार नहीं करता।

मुझे एक बहोत अच्छी बात किसी ने बतायी मुस्लिम रिलीजन में एक मान्यता है **कि भगवान् खुद केवल सवेरे कि इबादत को ही स्वीकार करता है।** सवेरे जो कुछ उसके लिए किया जाता है। योंतो हम भी सारा दीं बहोत कुछ कर सकते है पर सवेरे के अनुभव हमारे जीवन को बहोत सुखद बनाने वाले होते है। हम उसके प्यार का प्रैक्टिकल स्वरुप दिखाएं अपने जीवन से तब उसके प्यार में मग्न होने का अनुभव होगा।

दूसरी बात उसने हमें क्या क्या दिया है? इन पांच मुरलियां के बाद आज या कल या अपने घर जाकर यहीं करेंगे तो बहोत अच्छा होगा आप कम से कम दस बातें लिखेंगे अपने पास बाबा से मुझे यह यह मिला। बहोत कुछ मिला है हैम भूले रहते है उसने हमारे लिए बहोत कुछ किया है। जैसे लौकिक में सब बहोत माबाप बैठे है और सब को अनुभव है माबाप अपने बच्चो के लिए बहोत कुछ करते है बच्चो को उसका एहसास नहीं रहता। बच्चे कभी कभी यह भी केह देते तुमने हमारे लिए क्या किया? बहोत माताओ भाइयों को यह बात बच्चो से सुननी पड़ती है। बच्चे गुस्से में यह केह देते है कि तुमने हमारे लिए कुछ नहीं किया, हम तुम्हारे थे ही नहीं ऐसे ही कहीं बाबा के लिए तो नहीं कहते कि तुमने हमें कुछ नहीं दियां। क्या कहेंगे भाई? सब कुछ दे दिया है उसकी अवेयरनेस जानकारी उसकी जाग्रति उसकी पहचान हमें होनी चाहिए। सब से पहली और बड़ी चीज हमें बाबा से मिल गयी सब जानते है - **सम्पूर्ण सत्य ज्ञान।** जिस सत्य कि खोज हम दो युग से करते आरहे थे, जिस सत्य को पाने के लिए लोग ना जाने क्या क्या करते आये है वोह सत्य स्वयं चलकर हमारे पास आगया, कुछ भी प्रस्न हमारे मन में नहीं रहा। सभी विचार करें हम सब कि खोज ही समाप्त हो गयी या किसी को खोज बाकी है? खोज समाप्त हो गयी जिसने हमें इतना भरपूर किया उसके बारे में हमारे चित्त में कितना प्यार हो विचार करें। उसकी पालना में हम पल रहे है।

२) दूसरी बात में आपकी उन दस बातों को बढ़ा रहा हूँ आप ज्यादा लिखेंगे अपने पास। **हम बिलकुल प्रैक्टिकल में प्रभु पालना में पल रहे है।** शिवबाबा कोई कहने के लिए मातपिता नहीं है सच्चे अर्थो में मातपिता है उसके अंदर मातपिता कि फीलिंग्स है मुरलियां से आप देख सकते है। जैसे बच्चे को दुःख होता है तो उससे डबल दुःख माँ को होने लगता है। माँ कि फीलिंग्स है बच्चे के लिए। बाबा भी जो हमारा मातपिता है उसके अंदर सच्चे मातपिता कि फीलिंग्स है महसूस करें सभी वोह हमारा दुःख नहीं देख सकता, वोह हमें परेशान नहीं देख सकता, वोह हमें समस्यायों में नहीं देख सकता उसे लगता है लगता होगा मेरे बच्चे होकर और दुखी? सोचो आप आपका बच्चा भीख मांगने लगे गलियों में आपको लगेगा मेरा होकर और भीख मांगता है? आपका बच्चा लड़ाई करके आये रोज आप कहेंगे मेरे होकर तुम लड़ते हो? बाबा को भी लगता होगा ना? मेरे होकर तुम परेशानियों में जीवन जी रहे हो?

प्रभु पालना में हम प्रैक्टिकल में पल रहे है। बाबा कि एक बार कि बात सभी को याद दिलाऊं आप सभी इस बात को सुनकर मग्न होंगे यह बातें याद करके ही हम बाबा के प्यार में तल्लीन हो सकते है। बाबा कि मुरली चल रही थी किसी सीजन में कि परमात्मा तुम्हारी पालना कर रहा है। इस संसार में किसी कि पालना साहूकार घरो में होती है, उससे भी बढ़कर किसी कि पालना राजाओ के घरो में होती थी और हमारी पालना हो रही है परमात्मा के पास। बाबा ने कहा देखो तुम्हे खिलता भी बाबा है, सुलाता भी परमात्मा है, जगाता भी परमात्मा है, है सब को अनुभव? बाबा ने कहा दुःख होता है तो तुम्हारे आंसू भी बाबा पोंछता है, तुम्हे बहोत मदद करता है। तो कहा अगर दुनिया वालें यह सुने कि भगवान् इनको सुलाता भी है और जगाता भी है तो कहेंगे भगवान् खली बैठा है क्या? और बाबा ने उतर दिया था कि **अब तुम बच्चो के लिए भगवान् खली ही बैठा है।** सभी सोच ले ऐसा समय क्या दुबारा इस कल्प में आसकता है? जब भगवान् सम्मुख बैठ कर कहें में तुम्हारे लिए खली बैठा हूँ, में तुम्हे सब कुछ देने के लिए बैठा हूँ, जो चाहे लेलो, जितनी चाहे झोली भर लो। झोली शब्द तो बहोत छोटा है उसके लिए, भण्डार भरलो जन्म जन्म के लिए, जो चाहे

वरदान ले लो याद दिलाते है तुम भक्ति में तो थोडा थोडा मांगते थे, तुमको माँगना भी नहीं आता था में तो तुम्हे राज्य भाग्य देने आया हूँ तुम्हारी जन्म जन्म कि कामनाएं पूरी करने आया हूँ। सभी याद करें अपने को एहसास दिलाएं कि हम प्रभु पालना में पल रहे है।

३) तीसरी बात **प्यार उससे होता है जो अपना होता है परायों से प्यार नहीं होता।** सभी अपने को रोज यह फिलिंग दिलाया करें बाबा मेरा है। छोटा सा शब्द है लेकिन इसमें सभी सम्बन्धो का सार समाया हुआ है अपने को याद दिलायें करें जो सर्व शक्तिवान है वोह मेरा है। में एक बात जो बिलकुल प्रारंभिक है वोह में आप सब के सामने रख दूँ क्यूंकि बाबा के नए बच्चे भी बहोत सभा में बैठे है भक्ति में हम सब भगवान् से मांगते थे, मांगने वाले को क्या कहते है? हम इसके साथ एक शब्द जोड़ दें कि हम सभी भक्ति में रॉयल भिखारी थे। रॉयल थे थोड़े लेकिन अभी? अभी क्या बन गए? अधिकारी। अब हम यह केह सकते है भक्ति में यह कहना नहीं आता था कि भगवान् मेरा है।

एक छोटा सा उदाहरण गुजरात के बहोत भाई बाहें बैठे है अभी अगला इलेक्शन गुजरात में होगा मानलो आपका पिता इलेक्शन में खड़ा हो जाए, इलेक्शन जित जाए उसको चीफ मिनिस्टर ऑफ़ गुजरात बना दिया जाए। मुख्मंत्री बना दिया जाए आपके पिता को गुजरात का। आपको खबर आये कि आपका डेडी अब गुजरात का चीफ मिनिस्टर है। खबर सुनते hi सब सोच लो क्या क्या होगा? माताओं को पता लग जाए कि तुम्हारा पापा अब चीफ मिनिस्टर गुजरात का बन गया है आज कल तो ऐसा भाग्य जगता है ना लोगो का? देखो मनमोहन सिंग रिटायर होके घर बैठे थे प्राइम मिनिस्टर बना दिया गया, उससे पहले देवी गौड़ा, उससे पहले नरसिम्हा राव रिटायर थे ना उनको पता नहीं था कि वोह प्राइम मिनिस्टर बनेंगे। भाग्य जगा और प्राइम मिनिस्टर बना। मुझे याद है डॉक्टर मनमोहन सिंग कि पत्नी को टेलीफोन गया कि डॉक्टर साब अब प्राइम मिनिस्टर ऑफ़ इंडिया बन गए है तो वोह कहने लगी तुम क्या बोल रहे हो उन्होंने तो इलेक्शन भी नहीं लड़ा। अखबार में आया था उसकी लड़की और पत्नी थी उन्होंने कहा नहीं में फलाना बोल रहा हूँ उनको प्राइम मिनिस्टर चुन लिया गया है उन्होंने दूसरी जगह फ़ोन करके पता किया कि ऐसी ऐसी अफवाएं सुन रहे है क्या यह सत्य है? तो आपके पास भी ऐसा समाचार आजाये कि आपके पापा चीफ मिनिस्टर ऑफ़ गुजरात बन गए है तो नशे में चाल बदल जायेगी। देखो कैसे चलंेगे आप सब? ड्रेस बदल जायेगी, बोल बदल जाएगा, हाथ पैरो कि जो बॉडी leaunguages कहते है ना वोह सब बदल जाएगा। और अपने पड़ोसियों को अपने रिलेटिव को फटाफट फ़ोन करेंगे कि अब चिंता कि बात नहीं कोई भी काम पड़े हमें बताना। चीफ मिनिस्टर तो आपके पिताजी बने होंगे पर बन जायेंगे आप, थिक है? अब सोचो ज्ञान मिला, सूचना मिल गयी, टेलफोन भी आज्ञा आपके पास कि जो सर्व शक्तिवान है जिसे सारा संसार भगवान् कहता है, जो विश्व का रक्षक है जो सभी दुखो से मुक्त करने वाला है वोह तो तुम्हारा डेडी है, कहेंगे डेडी? परमपिता छोड़ दो डेडी कहो जरा, वोह तुम्हारा है। चलो इस गहराई में। अब यहाँ से जाकर तुम्हारे पड़ोसियों को रिलेटिव को कहना कि यदि भगवान् से कुछ काम पड़े तो हमें बताना, थिक है? वोह तो हमारा डेडी है, ऊपर टेलीफोन कर देंगे आपके सब काम पुरे होजाएंगे यह नशा आप लेकर जाए यहाँ से, इस अपने पन को बढ़ादें यहाँ। रोज याद दिलाएंगे आप स्वयं को यह अपना पन हो जाए भगवान् नहीं मेरा। अपना पन। उसे बच्चा बना लो दोस्त बना लो, पति बनालो, माँ बनालो, वोह हमारे समीप आरहा है बहोत रो इस समीपता को स्वीकार करलें और अपने को संकल्प दियां करें जो कुछ उसका है वोह सब मेरा है। एक संकल्प में बहोत अच्छा आप सब को देता हूँ बहोत ध्यान से सुनेंगे कि जो सख्तियां सर्व शक्तिवान के पास है वोह अब मेरे पास है। सर्व शक्तिवान कि सम्पूर्ण शक्तियां अब मेरे पास भी है। याद दिलाएं अपने को रोज याद दिलाएंगे बार बार याद दिलाएंगे तो शक्तियों का आभास होता जाएगा और बाबा से बहोत प्यार बढ़ता जाएगा।

प्यार में उसके मग्न होना है। गुजरात में तो कई बहोत अच्छे अच्छे भक्त हुए। नरसिंह मेहता बहोत प्रसिद्द

है गुजरात में चारसो ही साल हुए लगभग। कैसे उनका श्री कृष्ण से प्यार था, प्यार में एक बार रूठ भी तो गये थे कि बहोत देर लगा दी आये नहीं तो नाराज हो गए नरसिंह मेहता और दिखाया है कि विष्णुजी ने कान पकड़ लिए कि गलती हो गयी अब ऐसी गलती नहीं होगी। यह प्यार था। भगतो का भी जब भगवान् से इतना प्यार होता है तो हैम जो उसके अपने है बिलकुल अपने भगवान् जब हमें देखता होगा निचे, जब बाबा ऊपर से हमें देखता होगा तो इस दृस्टि से देखता होगा ना यह सब बच्चे मेरे है। ऐसे तो संसार कि सभी आत्माएं उसके है, सभी धर्मो कि लेकिन हमें तो विषेस देखता होगा ना? यह मेरे बैठे है यह वोह है जिन्हे में भी अपना केह सकता हूँ, जो मेरे कार्य में लग गए है जिन्होंने मुझे पहचान लिया है जो मेरी आज्ञाओं पर कदम रखने लगे है, यह सब मेरे है। तो जैसे उसके चित में हमारे लिए अपना पन है हमारे अंतर मन में भी उसके लिए बहोत अपना पन हो जाए।

यह तिन बातें मेने आपके सामने रखी आप और लिख ले आठ दस बातें क्या क्या बाबा से पाया है? बहोत कुछ पाया है पचास बातें लिखी जा सकती है। लिखे अपने पास क्या क्या मिल गया मुझे बात करें बाबा से तुमने आकर भाग्य के द्वार खोल दियें मेरे लिए, तुमने आकर मुझे ऐसी राह दिखा दीं कि राह भटकने कि साड़ी गुंजाइशे समाप्त हो गयी, तुम मेरे सर पर छत्र छाया बन कर आगये हो सदा बाबा हमारे सर पर छत्र छाया रहता है।

अब में आप सब के सामने पुरुषार्थ को सहज करने के लिए दो बातें बता देता हूँ बहोत सुंदर है वोह मेने कुछ दिनों से उनको अपने अनुभव में लाया है और योग में मग्न होने के लिए बुद्धि को स्थिर करने के लिए, आनंद कि अनुभूति के लिए यह दोनों अभ्यास बहोत सुंदर है। **१) पहला अभ्यास है बापदादा का आह्वाहन करेंगे बुलाएँगे बापदादा को।** सवेरे से शुरुआत करेंगे उसको बुलाने कि बहोत ध्यान देंगी माताएं अपने घरो में बुलाये बाबा को पांच बार रोज बाबा को बुला ले अपने घरो में कैसे बुलाएँगे में आपको बता रहा हूँ एक बहोत ही सिंपल तरीका। आपको अनुभव होगा कि **पांच बार जिस घर में भगवान् आने लगे वोह घर विघ्नो से मुक्त हो जाएगा, वोह घर शांति का चेतन मंदिर बन जाएगा, उस घर में सभी आकर्षित होकर खिंच खिंच कर आने लगेंगे अपने शांति के अनुभव के लिए।** भाई लोग भी अपने बिज़नस सेण्टर में पांच बार बापदादा का आह्वाहन करके देखो दिन में कभी भी। कैसे आह्वाहन करेंगे आँख खुलते ही पहले में सवेरे का सीन में आपको बता रहा हूँ। सवेरे आँख खुलते ही फ्रेश होकर बाप दादा को बुलाओ, बहोत प्यार से निमंत्रण दो कि बाबा निचे आजाओ आपका इन्तेजार कर रहे है हैम आँखे बिछाएं पलके बिछाएं बहोत प्यार से आपको बुला रहे है प्लीज आजाओ। प्यार से बुलाओ बाबा को और फिर देखो शिवबाबा ध्यान देंगे सभी शिवबाबा परमधाम से चलते है उनका दिव्य प्रकाश चारो और फ़ैल रहा है बाबा निचे उतर रहे है यह विज़न बनाये अपनी बुद्धि में बहोत अच्छी तरह देखे परमधाम से सर्व शक्तिवान निचे उतर ने लगा उसका दिव्य तेज चारो और फ़ैल रहा है। सूक्ष्म वतन में आकर ब्रह्मबाबा के सूक्ष्म तन में प्रवेश कर लेता है अब दोनों निचे आरहे है जल्दी जल्दी नहीं एक सेकंड में नहीं दस सेकंड आप लगाएंगे बापदादा दिव्य प्रकश बिखेरते हुए निचे उतर रहे है। सारा आकाश मंडल जैसे उसके परकाश से प्रकाशित हो गया है ऊपर को बुद्धि से देखें सारा आकाश मंडल उसके तेज से भर गया है निचे उतर रहे है दोनों हमारे सामने आजाते है। विष करो बाबा को गुडमोर्निंग करो भगवान् सामने आज्ञा मेहमान बन कर क्या करेंगे आप सोचले? गुजरात में मेने देखा कोई मेहमान आता है तो अलग अलग जगह पर अलग अलग रश्मे है स्वागत करने कि भगवान् का स्वागत करो वोह मेहमान बन कर आज्ञा है। वोह मेहमान तिन सौगाते लाया है आपके लिए तिन सौगात हमारे लिए ले आया है बाबा

१) पहला है **ताज** बहोत सुंदर चमकता हुआ हीरे रतन जड़ित ताज, मेरे सर पर रख देता है और याद दिलाता है बच्चे स्वर्ग का राजभाग्य तुम्हारे लिए लाया हूँ थोड़ी देर आजाये इस फिलिंग में।

२) फिर **तिलक** लगा देता है याद दिलाता है आप विजयी रतन हो । रोज एक बार याद दिलाएगा आप याद करेंगे। सुख दायी भव, विघ्न मुक्त भव एक वरदान मिलेगा रोज।

३) तीसरी सौगात है **चमकीली ड्रेस फ़रिश्ते कि** और बाबा ड्रेस देकर कहता है कि जो ड्रेस रात को पहनी थी उसका उतार दों और यह ड्रेस पहनो।

पुराना शरीर उतार देते है नया फ़रिश्ते का शरीर पहन लेते है अब दोनों फ़रिश्ते आमने सामने है बाबा इशारा करते है कि चलो और हैम दोनों चलते है ऊपर कि और उस सफ़ेद प्रकाश में सूक्ष्म वतन में जहाँ चाँद कि चांदनी मानो एक साथ अपना सौंदर्य बिखेर रही होती है हैम वहाँ पहोंच गए कुछ देर हम वहाँ है। फिर अब शिवबाबा इशारा करता है कि यह ड्रेस यहीं उतार दो और चलो मेरे साथ ऊपर और आत्मा बाबा के साथ चलती है परमधाम में दोनों आमने सामने बैठे है। यहाँ से करेंगे अमृतवेले कि शुरुआत, पसंद है? सुस्ती ख़तम हो जायेगी? सुस्ती बिलकुल ख़तम जागृति आजायेगी आत्मा जागृति, संकल्प श्रेस्ठ हो जायेंगे। ऐसा अगर हम पांच मिनट कर ले सवेरे दो यह बहोत सुंदर अनुभव बहोत सुंदर शुरुआत दिन कि बहोत सुखद होगी, योग कि अनेक समस्याएं ख़तम होगी। दस बार बुलालो सारे दिन में जस्ट बाबा आजाओ और देखो बाबा आगये है। कुछ समस्या आजाये, कुछ विघ्न आजाये आगे चल कर विनाश होगा, युद्ध होने लगे आपके सामने बंदूके चलने लगे तुरंत बाबा को बुलालो और सेफ। प्रकृति का प्रकोप होने लगे, सब नष्ट होने लगे बाबा को बुलालो सब सुरक्षित, माया आजाये बाबा को बुलालो जहाँ बाबा है वहाँ माया का अस्तित्व नहीं रहता। आदत डाल दें केवल आदत कि बात है पांच बार रोज बापदादा को बुलाएँगे। जो बुला सकेंगे वोह हाथ उठाओ। मेने हाथ इसलिए उठवाया कि आप सभी ने यह समज लिया कि यह अच्छी बात है। बात बिलकुल सिंपल है आपको कहीं भाषण करना है आपको आता नहीं टॉपिक नया दे दिया गया है बाबा को बुलालो, कोई ऐसा अहंकारी व्यक्ति आपके सामने आजाये जो बिलकुल नहीं सुन रहा है बाबा को बुलाओ, एक सेकंड मन ही मन कहो आजाओ देखो क्या होता है? रोज चमत्कारिक अनुभव होने लगेंगे।

२) अब दूसरा अभ्यास योग को बहोत सुखद बनाने वाला **पांच स्वरूपों का अभ्यास।** बहोत भाई बहने इसको जानते नहीं है, हमारा सम्पूर्ण स्वदर्शन चक्र है यह आत्मा इन पांच स्वरूपों में रही है पूरा कल्प।

I. पहला स्वरुप **अनादि स्वरुप** में आत्मा अपने इस स्वरुप को देखेंगे आत्मा यहाँ अंदर बैठी है चमकती हुयी ज्योति। किरणे फैलती है मुझ आत्मा से संकल्प किया करें मुझ में सम्पूर्ण पार्ट भरा हुआ है, में लाइट हाउस हूँ, शांति कि भण्डार हु संकल्प देंगे। केवल यह नहीं सोचेंगे में आत्मा अच्छे अच्छे संकल्प देंगे।

II. दूसरा स्वरुप है हमारा **आदि स्वरुप।** देव स्वरुप। सोचो हजारो साल हम सब देवता रहे है दो चार दिन नहीं अपने को यह संकल्प दें आप। हजारो साल में आत्मा देव स्वरुप में रहीं हूँ इसलिए सम्पूर्ण देवत्व, सम्पूर्ण देवताओ के संस्कार और पवित्रता मेरे अंदर है। सभी पहोंच जाया करें अपने पहले जन्म में। सभी पहोंचे पहले देव स्वरुप में संकल्प देंगे अपने को मेरे सर पर डबल ताज है, सिंहासन पर बिराजमान हूँ सामने दरबार लगा है, चारो और देवता विचरण कर रहे है, स्वर्ग में हूँ, प्रकृति का सम्पूर्ण सौंदर्य चारो और है।

III. तीसरा स्वरुप हमारा **पूज्य स्वरुप।** हम सभी मंदिरो कि देवी-देवतायें है। जो बहने यहाँ इष्ट देवी बैठी है जरा सोचके में एक प्रश्न पूछ रहा हूँ माताओ से केवल इस सभा में जो इष्ट देवियाँ बैठी है वोह हाथ उठाओ? थोड़ी है थिक है। भाइयों में जो इष्ट देव बैठे है? भाई ज्यादा है। माताओ को कयिओं को अभी पता नहीं इसलिए मेने पूछा बाबा के बच्चे बन्ने के बाद जो आत्माएं बाबा के कार्य में

सहयोग देती है उन सभी कि मंदिरो में पूजा होती है। बड़ी देवी ना होंगे गांव कि देवी तो जरुर होंगे। हर गांव में देवी होती है ना? जिस गांव में देवी का मंदिर ना हो लोग समझते थे वोह गांव ठीक नहीं कभी अकाल आएगा कभी प्रकृति के प्रकोप होंगे। तो थोड़ी देर के लिए चला करें में इष्ट देव - इष्ट देवी हूँ, मंदिर में हूँ। बहने सभी अपना स्वरुप जागृत किया करें, में अष्ट भुजा धारी दुर्गा हूँ। अम्बा कि बहोत मान्यता है गुजरात में, में ही जगत अम्बा हूँ। भाई कोई अपना स्वरुप चुन ले में विष्णु हूँ गणेश हूँ मंदिर में हूँ, सामने हजारो भक्त है। मेरी भृकुटि से सकास निकल कर सभी भक्तो पर पड़ रही है, भक्तो को वरदान दे रहे है हम, सभी भक्त जय जय कार कर रहे है, हम सभी भक्तो को मनोकामनाएं पूर्ण कर रहे है अपने उस स्वरुप में आजाये करें। दस सेकंड करेंगे।

IV. चौथा स्वरुप **ब्राह्मण स्वरुप।** हम ब्राह्मण है श्रेस्ठ भगयवान जिन्हे भगवान् मिला है बाप टीचर सद्गुरु के रूप में। एक सीन बनाएंगे सभी ध्यान देंगे सद्गुरु का हाथ मेरे सर पर है, हाथ से निकलने लगी अस्ट शक्तियों कि किरणे मेरे तन मन में फैलने लगी सातच करें इस सीन को सभी। सद्गुरु ने अपना हाथ मेरे सर पर रख दिया, हाथ से पवित्र किरणे फैलने लगी मेरे तन मन में दस सेकंड इस फिलिंग में आजाये तो पवित्र हो जायेंगे। मेरा अंग अंग पवित्र होके शीतल हो गए सद्गुरु का हाथ मेरे सर पर आगया।

V. पांचवा स्वरुप है **फरिश्ता स्वरुप।** हम लाइट के शरीर में है, जैसे यह शरीर है वैसे ही इसके अंदर प्रकाश का शरीर भी है। जो बहोत अच्छा पुरुषार्थ कर रहे है वोह एक सीन बनाएंगे एक विज़न बनाएंगे कि मेरे सामने थोड़ी दूर पर मेरा सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरुप खड़ा है जिसके अंग अंग से लाइट निकल रही है ऊपर से बाबा कि किरणे पड़ रही है, सामने देखो अपना और यह में हूँ। में लाइट हाउस हूँ, माईट हाउस हूँ, कभी में फैरष्ट आकाश मार्ग में हूँ, वतन में हूँ। यह पांच स्वरुप है हमारे। पांच बार करेंगे आप, पांच एक बार कर लिए फिर दूसरी बार तीसरी बार चौथी बार पांचवी बार करके देखे कितना आनद होगा। सवेरे पांच बार सामको पांच बार आत्म जागृति आएगी और निश्चित रूप से मन शांत होकर बाबा के प्यार में मग्न हो जाएगा।

ओम शांति।